वर्षा-ऋतु

गर्मी से तपे हुए मनुष्यों, पशु-पक्षियों और जीव-जन्तुओं को शीतलता देने वर्षा-ऋतु आती है | वर्षा आषाढ़ से शुरू होकर भादों के अन्त तक रहती है | प्रायः १५ जुलाई से १५ सितम्बर तक वर्षा के दिन होते हैं |

सूर्य की किरणों जब समुद्र-जल पर पड़ती हैं, तो पानी भाप बनकर उड़ जाता है | वह जमा होकर बादल का रूप धारण कर लेता है | पवनें इन बादलों को उड़ाकर पर्वतों की ओर ले जाती हैं | पहाड़ों से टकराकर कुछ बादल वरस पड़ते हैं | कुछ बादल पवनों द्वारा मैदानों की तरह ले जाए जाते हैं | वे आपस में टकराकर वरस पड़ते हैं | वर्षा से गर्मी से तपती पृथ्वी की प्यास बुझती है |

जब पुरवाई चलती है, तो बादलों को साथ लाती है | बादलो को देखकर मोर नाचने लगते हैं | काले-काले बादलों को आकाश में देखकर किसानों के मन प्रसन्नता से भर जाते हैं | बालक-बालिकाएँ भी नाचने-गाने, ताली बजाने लगते हैं | नर-नारी, पशु-पक्षी प्रसन्न हो जाते हैं | कई लोग झुला झूलने लगते हैं | शीतल पवन के झोंके मन को प्रसन्न कर देते हैं | हरियाली तीज और रक्षा-बंधन के त्यौहार वर्षा-ऋतु में ही होते हैं | लोग मालपुए, पेड़े और खीर खाकर मन को प्रसन्न करते हैं |

बूँदाबंदी और रिमझिम होने पर लोग बहुत खुश होते हैं | परन्तु जब मूसलाधार वर्षा होने लगती है, तो लोग भीगने से बचने के लिए इधर-उधर दौड़ने लगते हैं | तब छाते और बरसाती (रेन कोट) भी काम नहीं आते | लोग खूब भीग जाते हैं |

वर्षा से खेत, बाग़ और वन हरे-भरे हो जाते हैं | तालाब और गड्ढे पानी से भर जाते हैं | मेंढक टर्राने लगते हैं | केंचुए निकल आते हैं | लाल-लाल बीर-बहूटियाँ दिखाई देने लगती हैं |

अधिक वर्षा होने पर नदी-नालों में बाढ़ आ जाती है | गाँवों में पशु बह जाते हैं | कच्चे घर ढह या बह जाते हैं | यदि बहुत अधिक वर्षा न हो, तो वर्षा-ऋतु बहुत सुहावनी ऋतु है | इसलिए इसे “ऋतुओं की रानी” कहा जाता है |

1- Metindeki cümlelerin yapısı incelenerek, çevirisi yapılacaktır.